बाढ़ आती है

डॉ0 सुनील कुमार सिंह एवं जागृति गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भुड़कुड़ा गाजीपुर

बाढ़ आती है,
जैसे कोई अनचाहा मेहमान,
जो बिना बुलाए दरवाज़ा तोड़कर
आँगन में घुस पड़ता है ।

तो खेतों में लहराते धान
अचानक जलकुंभी बन जाते हैं,
हरियाली डूब जाती है
और किसान की आँखों में
केवल पानी ही पानी रह जाता है ।

तो कच्चे घरों की दीवारें
मिट्टी में लौट जाती हैं,
गोबर से लिपी चौखट
सिर झुकाकर बह निकलती है ।

तो मासूम बच्चे
चप्पल, किताबें, बस्ता
सब छोड़कर नाव ढूँढते हैं,
पढ़ाई किसी किनारे पर फँसी हुई नाव
बनकर रह जाती है ।
बाढ़ आती है –
तो माँएँ अपनी गोद कसकर थाम लेती हैं,
दूध की एक बूँद के लिए
घंटों नज़रें टिकाए रहती हैं,
कि कहीं से नाव वाला आए
और अनाज की बोरी लेकर लौटे ।

तो राजनीति के भाषण भी
रेत के टीले साबित होते हैं,
राहत के वादे पानी में बहते
कागज़ी नावों की तरह
डूब जाते हैं ।

तो मंदिर की घंटी, मस्ज़िद की अज़ान
दोनों की आवाज़ें
एक साथ कांपती हैं,
क्योंकि पानी मज़हब नहीं देखता,
सिर्फ़ रास्ता खोजता है ।

तो उम्मीद का हर दीया
बहाव में डगमगाता है,
पर फिर भी
गाँव की औरतें,
बाँस की टोकरी में जलते दीए रख
नदी को मनाती हैं-
'हे माँ, अब बस कर।'
और जब पानी उतरता है-
तो ज़मीन पर बचता है
कीचड़, टूटी यादें,
और बच्चों की आँखों में सवाल
'क्या बाढ़ हर साल लौटकर आएगी?'
हाँ...
बाढ़ आती है
हर बार,
केवल नदी में ही नहीं,
बल्कि इंसान के सीने में भी।

***